भेदभाव और बहिष्करण का ख़ात्मा | 'सद्भावना विद्यालय' की ओर

सावित्री साहू

स्कूल एक ऐसी संस्था होती है जो बच्चों को संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें इन मूल्यों को आत्मसात करने में मदद करती है। सीखने को बेहतर बनाने के लिए और वर्तमान में तथा आगे वयस्कों के रूप में बच्चों को कामयाबी हासिल करने में मदद करने के लिए, स्कूलों को समानुभूति और समानता का माहौल बनाना चाहिए। इसे सुनिश्चित करने के सबसे महत्त्वपूर्ण तरीक़ों में से एक है बच्चों को कक्षा की तमाम गतिविधियों, खेल के मैदान में और रोज़ की सभा में शामिल करते हुए स्कूल में उनके साथ बराबरी का व्यवहार करना और उनकी स्वतंत्र सोच और राय का सम्मान करना। स्कूल बच्चों के व्यवहार में बदलाव लाता है और उन्हें अपने लिए एक बेहतर भविष्य निर्मित करने के लिए तैयार करता है। यह उनको समाज के बारे में सोचने के लिए भी प्रेरित करता है।

स्कूल आने वाले बच्चों में हम आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और जातीय पृष्ठभूमि में विभिन्नता देखते हैं और उनके रीति-रिवाज़ों एवं विचारधाराओं में अन्तर होता है। स्कूल के भीतर बच्चों के व्यवहारों में उनकी पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों से जुड़े भेद प्रतिबिम्बित होते हैं। इन व्यवहारों के परिणामस्वरूप बच्चों की शिक्षा के विकास को रोकने वाले कारणों को चिन्हित करना चाहिए और उनके बारे में कक्षा में और उसके बाहर चर्चा करनी चाहिए।

मुझे कक्षाओं में उन बच्चों के साथ काम करने का मौक़ा मिला है जो सामाजिक, शारीरिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और जातीय रूप से विभिन्नता लिए हुए थे। व्यक्तिगत रूप से मैंने उन बाधाओं का सामना किया जो समावेशन को हासिल करने में आती हैं। मैं इस लेख में अपने अनुभवों तथा उन प्रयासों को बाँटना चाहूँगी जो मैंने आमतौर पर जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म और अन्य मतभेदों के प्रति स्थापित ग़लत धारणाओं से ऊपर उठने में बच्चों की मदद करने के लिए उठाए थे।

जेंडर आधारित अलगाव

मेरी कक्षाओं और स्कूलों में, आमतौर पर, जिस पहली चुनौती का मैंने सामना किया वह थी जेंडर आधारित भेदभाव। हालाँकि, यह हो सकता है कि बच्चे इसके प्रति जागरूक भी न हों और हम शिक्षक इसे स्वीकार न करते हों, लेकिन जेंडर आधारित अलगाव हमारे चारों तरफ़ मौजूद है। जब मैं ऐसी कक्षा में विभिन्न विषय पढ़ाती हूँ, जहाँ विद्यार्थियों को समूहों में काम करना होता है, तो मैंने देखा है कि आमतौर पर लड़के लड़कों को और लड़कियाँ लड़कियों को अपने समूह में चुनती हैं। साथ बैठने, बातें करने, जोड़ों में पढ़ने और आउटडोर खेलों के दौरान भी हम उनका यही व्यवहार देखते थे। लड़के और लड़कियाँ, दोनों ही अपनी व्यक्तिगत चीज़ें जैसे पेन, क्रेयॉन आदि भी एक-दूसरे के साथ नहीं बाँटते थे।

मेरा मानना है कि छोटे बच्चों में ऐसा व्यवहार समावेशी समाज की राह में एक बाधा है। इसलिए मैंने अपनी कक्षा में संवाद को बढ़ावा देने वाला माहौल बनाया। उदाहरण के लिए, मैंने उनसे कहा कि उनकी कक्षा की नीलम एक अत्यधिक मेधावी नृत्यांगना और कलाकार है, क्या वे उससे ये कौशल नहीं सीखना चाहेंगे? कि वेदिका और दीक्षा बेहद ख़ूबसूरत गीत और कहानियाँ लिखती हैं, तो क्या वे उनसे यह सीखना नहीं पसन्द करेंगे? कि देवराज जो खेलों में बहुत अच्छा करता है और दूसरों को भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करता है, तो क्या वे उसके साथ खेलना नहीं चाहेंगे? हमने साथियों से सीखने के रास्ते में आने वाली चुनौतियों के बारे में और कक्षा में उनसे कैसे मदद लेनी है, इस बारे में भी चर्चा की। मैंने बच्चों को परस्पर सहयोग करने के लिए प्रेरित किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि लड़के-लड़कियाँ दोनों एक-दूसरे के दोस्त हो सकते हैं। मैंने उन्हें यह एहसास दिलाया कि वे घरेलू कामों जैसे झाड़ू लगाने, पानी लाने, बर्तन माँजने में अपनी माँ की और बग़ीचे में व घर का सामान लेकर आने में अपने पिता की बहुत आसानी से मदद करते हैं। चाहे वे लड़के हों या लड़की सभी लोग खेलना, पढ़ना, लिखना, घूमना और मज़े करना चाहते हैं। शारीरिक विभिन्नताओं के अलावा एक लड़की और एक लड़के में कोई अन्तर नहीं होता।

मैंने साथ मिलकर काम करने के मूल्य को बताने के लिए लड़के और लड़कियों को बारी-बारी से एक गोले में बिठाया। समूह बनाते समय भी हमने इसे ध्यान में रखा। आज, मेरी कक्षा में किसी तरह का जेंडर आधारित अलगाव नहीं है। बच्चे एक साथ खेलते हैं और परस्पर सहानुभूति दिखाते हैं। जब मैं प्रशिक्षण कार्यक्रमों अथवा किसी अन्य काम से बाहर जाकर

कक्षा में वापस लौटती हूँ तो विद्यार्थी मुझे मेरी अनुपस्थिति में एक-दूसरे को पढ़ाने और सीखने के अनुभवों के बारे में बताते हैं। एक बार मैं आधे दिन के लिए स्कूल में नहीं थी। जब मैं अगले दिन स्कूल आई तो मैंने देखा कि हरीश को चोट लग गई थी। बाक़ी सभी बच्चे उसे लेकर बहुत चिन्तित हो गए थे। इसलिए हम उससे मिलने गए। सभी बच्चे यह देख कर ख़ुश थे कि हरीश की हालत में सुधार हो रहा था। सभी ने उसे सुरक्षित रहने और जल्दी ठीक होने के लिए सुझाव दिए। हमने हरीश के अभिभावक से बात की और वे भी हमसे मिलकर बेहद ख़ुश हुए।

बच्चों में उनके सहपाठी के लिए इतनी फ़िक्र देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा और सराहना का भाव पैदा हुआ क्योंकि मैं उनमें मानवीय मूल्य पनपते देख पा रही थी। इससे उन्हें उत्कृष्ट नागरिक के रूप में विकसित होने में मदद मिलेगी, चाहे उनका जेंडर कुछ भी हो।

आर्थिक असमानता

अमीर और ग़रीब परिवारों में असमानता एक अन्य अवरोध था जिसे मैंने अपनी कक्षा में देखा। इसका बच्चों पर ऐसा असर था कि वे स्वयं को या अपने परिवार को महत्त्व नहीं देते थे। एक बच्चे ने कहा, "हम अमीर नहीं हैं, इसीलिए कोई हमारे घर नहीं आता। लोग अमीर लोगों के घरों में अक्सर जाते हैं।" लेकिन मैंने बच्चों को यह बताया कि यह सही नहीं है। "हमारे स्कूल को देखो, यहाँ अलग-अलग प्रकार के घरों के बच्चे पढ़ने आते हैं। हमारे स्कूल में किसी भी विद्यार्थी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता। कक्षा में सभी बच्चे समान तरीक़े से सीखते हैं और सभी को बोलने और सवाल पूछने का समान अवसर दिया जाता है," मैंने उन्हें समझाया। और कुछ दिनों के बाद उस बच्चे को ग़लत साबित करने के लिए मैं और बाक़ी विद्यार्थी उस बच्चे के घर गए और उसके परिवार के साथ कुछ समय बिताया। बच्चे को इससे बहुत ख़ुशी हुई।

जातिगत भेद

बच्चों का आपस में जाति के बारे में बात करना और घोषित करना कि मैं इस जाति का हूँ और तुम उस जाति के हो, कक्षा में मेरा तीसरा अवरोध था। सम्भवतः बच्चे यह सब अपने घरों में देखते हैं और वे इस बात पर भरोसा करने लगते हैं कि कुछ ख़ास जातियों के लोग ही कुछ ख़ास तरह के काम करते हैं, जैसे लोहार, नाई, चरवाहा आदि। भेदभाव की यह व्यवस्था अभी भी गाँवों में देखी जा सकती है। बच्चे अपने समुदाय में अन्य लोगों में यह व्यवहार देखते हैं और उसका अनुकरण करने लगते हैं।

मैंने इस मुद्दे पर उनसे चर्चा की और पूछा, "अगर कोई किसी ख़ास जाति का है तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? सबसे पहले और सबसे प्रमुख रूप से हम सभी इन्सान हैं।" मैंने उन्हें उदाहरण दिया कि आमतौर पर सभी इन्सानों के पास दो हाथ, दो पैर और शरीर के अन्य अंग होते हैं। बच्चे इसके बारे में सोचने लगे। मैंने उन्हें बताया "स्वतंत्र इच्छा और काम करने की चाह के साथ आज की दुनिया में कोई भी कुछ भी बन सकता है।"

हमारे स्कूल में सभी विद्यार्थियों के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाता है। स्कूल में बच्चे की जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। सभी बच्चे दोपहर का भोजन साथ में करते हैं। साथ में पढ़ते हैं, साथ में खेलते हैं। वे इस बात को भी समझ गए हैं कि समाज में हर एक के काम का महत्त्व है। चूँकि हम सारे काम ख़ुद ही नहीं कर सकते तो लोहार, जो लोहे के समान बनाता है, वह उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि कोई किसान या चरवाहा। हम अपने काम को पूरा करने के लिए और अपने जीवन निर्वाह के लिए दूसरों के काम पर निर्भर करते हैं।

बहुत-सी ऐसी चर्चाओं के बाद हम अब अपने स्कूल के बच्चों में किसी तरह का जातिगत भेदभाव नहीं पाते हैं। जब बच्चों के माता-पिता स्कूल में आते हैं तो उन सभी के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाता है। इससे यह भी पता चलता है कि हम शिक्षक भी भेदभाव नहीं करते हैं।

सामाजिक बहिष्करण

मुझे सामाजिक बहिष्करण का एक मामला पता चला। गाँव और समाज के लोगों द्वारा गाँव के कुछ सदस्यों का बहिष्कार कर दिया था। इस तरह के बहिष्करण का बच्चों पर गहरा असर पड़ता है और उनके नज़रियों और विचारों में फेरबदल हो जाता है। ऐसी चीज़ों के बारे में बच्चे स्वयं सोचने में समर्थ नहीं होते, वे अपने परिवार के सदस्यों और अन्य बड़े-बूढ़ों को देखते हैं और उनका अनुसरण करने लगते हैं। मेरी कक्षा की एक लड़की रागिनी के परिवार का समाज ने बहिष्कार कर दिया था। इसके परिणामस्वरूप अन्य बच्चों के साथ, उसकी पड़ोसी और अच्छी दोस्त, जो उसी की कक्षा में पढ़ती है और उसके साथ पेन, नोटबुक, रंग जैसे सामान बाँटती थी, ने उसके साथ ये सभी चीज़ें बाँटनी बन्द कर दीं। उसने रागिनी के साथ खेलना, पढ़ना और यहाँ तक कि बैठना भी बन्द कर दिया। मैंने बच्चों से पूछा कि वे उसके साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं और मुझे उनसे पता चला कि रागिनी के परिवार को गाँव के समाज ने बहिष्कृत कर दिया था। उन्हें गाँव में किसी के घर भी जाने और किसी से भी बात करने से रोक दिया गया था। इससे मुझे बहुत गहरा धक्का लगा। मैंने बच्चों से कहा कि, "वे जो कर रहे हैं वह ग़लत है। देखो, रागिनी हमारे स्कूल में पढ़ाई करने के लिए आती है। हम उसके साथ किसी तरह

का भेदभाव नहीं करते। हम पढ़ते समय, लिखते समय और खेलते समय उसे अन्य बच्चों के साथ बिठाते हैं। बच्चे उसके साथ ख़ाना खाते हैं, उससे बातें करते हैं। वह भी इन्सान है। हमें इन्सानी मूल्यों को ध्यान में रखते हुए उसके साथ प्यार और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। अगर कोई तुम्हारे साथ इस तरह व्यवहार करे तो तुम्हें कैसा लगेगा?" मैंने पूछा। बच्चे इस बात को समझ गए और उन्होंने रागिनी से फिर से दोस्ती कर ली। एक दिन हम पूरी कक्षा के साथ रागिनी के घर गए। हमने उसके माता-पिता से बातचीत की और उनके साथ चाय पी। सामाजिक बहिष्करण के साथ अपनी असहमति पर ज़ोर देने के लिए हमने बच्चों से एक अन्य बहिष्कृत परिवार से शिक्षकों की चाय बनाने के लिए दूध लाने को कहा। पहले वे हिचक रहे थे, लेकिन अब वे उस परिवार से स्कूल के लिए नियमित दूध लाते हैं।

इन सारी घटनाओं से मुझे बच्चों को बेहतर ढंग से समझने, उनकी सामाजिक व आर्थिक विचारधाराओं को जानने के साथ ही इस बात पर विचार करने का अवसर मिला कि कैसे सामाजिक रवैए जो समाज में भेदभाव और अलगाव पैदा करते हैं, बच्चों को भी आज्ञा मानने वाले व दब्बू बना देते हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने से रोकते हैं। शिक्षकों के रूप में हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है कि हम बच्चों के भीतर सहानुभूति, समानुभूति और मैत्री की भावना भरें जिससे हर एक की वृद्धि और विकास सुनिश्चित होंगे।

*बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

सावित्री साहू जामगाँव (ज़िला बेमतरा, छत्तीसगढ़) के शासकीय प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापिका हैं। उन्होंने शिक्षा में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ ही डिप्लोमा हासिल किया है। उन्हें प्राथमिक स्कूल में पढ़ाने का 15 साल का अनुभव है। उन्हें भाषाएँ और गणित पढ़ाने में मज़ा आता है। वे ख़ासतौर पर क्रियात्मक शोध में रूचि लेती हैं। शिक्षक के रूप में अपने काम में उन्हें शैक्षिक गतिविधियों में बच्चों की रुचि को बढ़ाना, ग्रामीण इलाके में उनके माहौल से विभिन्न सामाजिक अवरोधों को दूर करना और चर्चाओं के माध्यम से मूल्ययुक्त शिक्षा देना अच्छा लगता है। उनसे *savitrisahu0011989@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक ज़रूरतों को सीखने की अवधारणाओं और नतीजों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसे बढ़ावा देने के लिए कई शैक्षणिक तरीक़े अपनाए जा सकते हैं। इनमें ख़ास हैं — खेल, नाटक, कला, समूह गतिविधि, सहमति-असहमति की गुंजाइश वाली गतिविधियाँ, ज़ोर से पढ़ना, सक्रिय रूप से सुनना, खुली चर्चा और स्वतंत्र लेखन। इस तरह की गतिविधियों से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।

- चिक्कावीरेश एस वी, प्रोजेक्ट कार्य के माध्यम से सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, पेज 27